Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण भारत में पलायन और उसके सामाजिक परिणाम : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

पंकज कुमार मीणा*

* सहायक आचार्य (समाजशास्त्र) समाजशास्त्र, एमएलवी, राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – भारत को प्राय: गाँवों का देश कहा जाता है, क्योंकि देश की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण समाज भारतीय सामाजिक संरचना की आधारशिला रहा है। किन्तु आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा पर्यावरणीय कारणों से ग्रामीण जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग निरंतर ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों तथा अन्य राज्यों की ओर पलायन कर रहा है। पलायन की यह प्रक्रिया केवल जनसंख्या के स्थान परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, पारिवारिक व्यवस्था, आर्थिक गतिविधियों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामुदायिक जीवन को भी प्रभावित करती है। ग्रामीण भारत में बढ़ते पलायन ने एक ओर लोगों को रोजगार, शिक्षा तथा बेहतर जीवन स्तर के अवसर उपलब्ध कराए हैं, वहीं दूसरी ओर पारिवारिक विघटन, कृषि संकट, महिलाओं पर बढ़ते दायित्व, बच्चों के समाजीकरण में परिवर्तन तथा सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याओं को भी जन्म दिया है। प्रस्तुत शोध लेख में ग्रामीण भारत में पलायन की प्रवृत्ति, उसके कारणों तथा सामाजिक परिणामों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है।

शब्द कुंजी – पलायन, ग्रामीण समाज, सामाजिक परिवर्तन, नगरीकरण, कृषि संकट, परिवार, प्रवासी श्रमिक।

प्रस्तावना – सामाजिक गतिशीलता मानव समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। व्यक्ति और समूह बेहतर जीवन, रोजगार, शिक्षा, सुरक्षा तथा संसाधनों की उपलब्धता के उद्देश्य से एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गमन करते हैं। समाजशास्त्र में इस प्रक्रिया को पलायन कहा जाता है।[1]

भारत में पलायन की प्रक्रिया प्राचीन काल से विद्यमान रही है, किन्तु औद्योगिकीकरण, नगरीकरण तथा वैश्वीकरण के प्रभाव से इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर होने वाला पलायन भारतीय समाज के समक्ष एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है।[2]

ग्रामीण भारत में भूमि जोतों का विखंडन, कृषि आय में कमी, बेरोजगारी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की सीमित उपलब्धता तथा प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता दबाव लोगों को गाँव छोड़ने के लिए प्रेरित कर रहा है। दूसरी ओर नगरों में रोजगार के अवसर, उच्च शिक्षा, आधुनिक सुविधाएँ तथा बेहतर जीवन शैली लोगों को आकर्षित करती हैं।[3]

पलायन की प्रक्रिया ने ग्रामीण समाज के सामाजिक संगठन, पारिवारिक संरचना तथा सामुदायिक जीवन को प्रभावित किया है। इसने पारंपरिक सामाजिक संबंधों में परिवर्तन उत्पन्न किया है तथा ग्रामीण एवं नगरीय संस्कृतियों के मध्य अंत:क्रिया को बढ़ावा दिया है।[4]

पलायन की अवधारणा एवं प्रकार – पलायन सामाजिक जनांकिकी का एक महत्वपूर्ण विषय है। सामान्यत: पलायन से आशय किसी व्यक्ति अथवा समूह द्वारा स्थायी या अस्थायी रूप से अपने निवास स्थान को छोड़कर किसी अन्य स्थान पर निवास स्थापित करने से है।[5]

जनसंख्या वैज्ञानिकों के अनुसार पलायन केवल भौगोलिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया भी है।[6]

1. **आंतरिक पलायन–** जब व्यक्ति किसी देश की भौगोलिक सीमाओं के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है, तो उसे आंतरिक पलायन कहा जाता है। भारत में ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों की ओर होने वाला पलायन इसका प्रमुख उदाहरण है।[7]
2. **बाह्य पलायन–** जब व्यक्ति अपने देश को छोड़कर किसी अन्य देश में निवास स्थापित करता है, तो उसे अंतरराष्ट्रीय अथवा बाह्य पलायन कहा जाता है।
3. **मौसमी पलायन–** कृषि कार्यों की समाप्ति के बाद सीमित अवधि के लिए रोजगार की तलाश में अन्य स्थानों पर जाने की प्रक्रिया को मौसमी पलायन कहा जाता है। राजस्थान, बिहार, झारखंड तथा ओडिशा के अनेक श्रमिक इस प्रकार के पलायन में संलग्न पाए जाते हैं।[8]
4. **अस्थायी एवं स्थायी पलायन–** कुछ लोग सीमित अवधि के लिए रोजगार या शिक्षा प्राप्त करने हेतु पलायन करते हैं, जबकि कुछ लोग स्थायी रूप से अपने मूल निवास स्थान को छोड़ देते हैं। यह स्थायी पलायन ग्रामीण समाज की जनसंख्या संरचना को प्रभावित करता है।

ग्रामीण भारत में पलायन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– भारत में ग्रामीण पलायन की प्रक्रिया औपनिवेशिक काल से ही प्रारम्भ हो गई थी। ब्रिटिश शासन के दौरान चाय बागानों, रेल निर्माण परियोजनाओं तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों में श्रमिकों की आवश्यकता के कारण बड़ी संख्या में ग्रामीण जनसंख्या का स्थानांतरण हुआ।[9]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात औद्योगिकीकरण की नीतियों तथा महानगरों के विकास ने ग्रामीण पलायन को और अधिक गति प्रदान की। मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई तथा बेंगलुरु जैसे महानगर रोजगार के प्रमुख केंद्र बन

गए।[10]

आर्थिक उदारीकरण के बाद सेवा क्षेत्र के विस्तार तथा निर्माण उद्योग में वृद्धि के कारण ग्रामीण युवाओं के लिए शहरों में रोजगार के अवसर बढ़े। परिणामस्वरूप ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन की दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।[11]

कोविड-19 महामारी के दौरान प्रवासी श्रमिकों की समस्याएँ राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनीं। महामारी के कारण बड़ी संख्या में श्रमिकों को पुन: अपने गाँवों की ओर लौटना पड़ा, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।[12]

ग्रामीण पलायन के प्रमुख कारण- ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन के पीछे अनेक आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय कारण उत्तारदायी हैं।

1. **कृषि संकट-** भारत की अधिकांश ग्रामीण आबादी कृषि पर निर्भर है, किन्तु कृषि क्षेत्र अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। भूमि जोतों का छोटा आकार, सिंचाई सुविधाओं का अभाव, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा कृषि उत्पादों के अस्थिर मूल्य किसानों की आय को प्रभावित करते हैं।[13]

बार-बार होने वाले सूखे, बाढ़ तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों ने भी कृषि को जोखिमपूर्ण बना दिया है। परिणामस्वरूप अनेक किसान एवं कृषि श्रमिक रोजगार की तलाश में नगरों की ओर पलायन करने लगे हैं।

2. **बेरोजगारी एवं अल्परोजगार-** ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि रोजगार के अवसर सीमित हैं। कृषि कार्य भी वर्ष के कुछ महीनों तक ही उपलब्ध रहता है। ऐसी स्थिति में युवा वर्ग वैकल्पिक रोजगार की खोज में शहरों की ओर प्रस्थान करता है।[14]

3. **शिक्षा एवं कौशल विकास-** उच्च शिक्षा संस्थानों, तकनीकी प्रशिक्षण केंद्रों तथा व्यावसायिक शिक्षा सुविधाओं का अधिकांश भाग नगरीय क्षेत्रों में केंद्रित है। बेहतर शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से बड़ी संख्या में विद्यार्थी शहरों की ओर जाते हैं और बाद में वहीं रोजगार प्राप्त कर स्थायी रूप से बस जाते हैं।[15]

4. **औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण-** औद्योगिक विकास ने नगरों में रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाया है। निर्माण उद्योग, परिवहन, होटल व्यवसाय, सूचना प्रौद्योगिकी तथा सेवा क्षेत्र में श्रमिकों की बढ़ती मांग ग्रामीण युवाओं को आकर्षित करती है।[16]

5. **प्राकृतिक आपदाएँ एवं जलवायु परिवर्तन-** सूखा, बाढ़, भूकंप तथा अन्य प्राकृतिक आपदाएँ ग्रामीण जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उत्पादन में गिरावट आने से लोग वैकल्पिक आजीविका की तलाश में पलायन करने के लिए विवश हो जाते हैं।[17]

ग्रामीण परिवार व्यवस्था पर पलायन का प्रभाव- पलायन का सबसे अधिक प्रभाव परिवार संस्था पर पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त परिवार व्यवस्था पारंपरिक सामाजिक संगठन का महत्वपूर्ण अंग रही है। किन्तु रोजगार की तलाश में परिवार के युवा सदस्यों के बाहर चले जाने से संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा है।[18]

पलायन के कारण पति-पत्नी के मध्य भौगोलिक दूरी बढ़ जाती है, जिससे पारिवारिक संबंधों में तनाव उत्पन्न होने की संभावना रहती है। वृद्ध माता-पिता प्राय: गाँवों में अकेले रह जाते हैं, जिसके कारण उनकी देखभाल की समस्या उत्पन्न होती है।

दूसरी ओर प्रवासी सदस्यों द्वारा भेजी गई धनराशि से परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार भी होता है। बेहतर आवास, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाओं पर व्यय करने की क्षमता बढ़ती है।

महिलाओं की स्थिति एवं बदलती भूमिकाएँ- पुरुषों के पलायन के परिणामस्वरूप ग्रामीण महिलाओं की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है। अब महिलाएँ केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं रह गई हैं, बल्कि कृषि कार्यों, पशुपालन, बच्चों की शिक्षा तथा पारिवारिक निर्णयों में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं।[19]

महिलाओं की जिम्मेदारियों में वृद्धि होने से उनमें आत्मविश्वास तथा निर्णय क्षमता का विकास हुआ है। कई स्थानों पर महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों में भी भागीदारी कर रही हैं।[20]

हालाँकि कार्यभार में वृद्धि, सामाजिक सुरक्षा का अभाव तथा आर्थिक संसाधनों तक सीमित पहुँच जैसी समस्याएँ आज भी ग्रामीण महिलाओं के समक्ष विद्यमान हैं।

बच्चों की शिक्षा एवं समाजीकरण पर प्रभाव- पलायन की प्रक्रिया बच्चों के जीवन तथा उनके समाजीकरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। परिवार समाजीकरण का प्रथम एवं सर्वाधिक प्रभावशाली अभिकरण माना जाता है। जब परिवार का कोई सदस्य अथवा दोनों अभिभावक रोजगार की तलाश में अन्य स्थानों पर चले जाते हैं, तब बच्चों के पालन-पोषण एवं व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया प्रभावित होने लगती है।[21]

ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक ऐसे परिवार पाए जाते हैं जिनमें पिता अथवा माता लंबे समय तक घर से दूर रहते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों का पालन-पोषण प्राय: दादा-दादी अथवा अन्य परिजनों द्वारा किया जाता है। इससे बच्चों के भावनात्मक विकास पर प्रभाव पड़ सकता है। कई बार बच्चों में अकेलेपन, असुरक्षा तथा आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याएँ भी देखने को मिलती हैं।

दूसरी ओर, प्रवासी श्रमिकों द्वारा भेजी गई धनराशि के कारण परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है, जिससे बच्चों को बेहतर शैक्षणिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकती हैं। निजी विद्यालयों में प्रवेश, कोचिंग संस्थानों में अध्ययन तथा तकनीकी शिक्षा तक पहुँच आसान हो जाती है।[22]

हालाँकि बार-बार स्थान परिवर्तन करने वाले प्रवासी परिवारों के बच्चों की शिक्षा निरंतरता के अभाव से प्रभावित होती है। विद्यालय परिवर्तन, भाषा संबंधी कठिनाइयाँ तथा सामाजिक समायोजन की समस्याएँ उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं कृषि पर प्रभाव- ग्रामीण पलायन का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर मिश्रित प्रभाव पड़ता है। एक ओर प्रवासी श्रमिकों द्वारा भेजी गई धनराशि ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि करती है, वहीं दूसरी ओर कृषि कार्यों के लिए श्रमिकों की कमी उत्पन्न हो जाती है।[23]

युवा एवं सक्षम श्रमिकों के पलायन के कारण कृषि गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं। अनेक क्षेत्रों में खेती योग्य भूमि परती छोड़ी जाने लगी है अथवा वृद्धजन एवं महिलाएँ कृषि कार्यों का दायित्व संभालने के लिए विवश हो जाती हैं।

पलायन के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी दरों में वृद्धि भी देखी गई है। इससे भूमिहीन कृषक एवं छोटे किसानों की उत्पादन लागत बढ़ जाती है। दूसरी ओर, प्रवासी आय के माध्यम से ग्रामीण परिवार आधुनिक कृषि उपकरण, सिंचाई साधन तथा उन्नत बीज खरीदने में सक्षम होते हैं।

कई अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि प्रवासी आय का उपयोग

आवास निर्माण, उपभोक्ता वस्तुओं की खरीद तथा बच्चों की शिक्षा पर अधिक किया जाता है, जबकि कृषि निवेश पर अपेक्षाकृत कम व्यय किया जाता है।[24]

नगरीय क्षेत्रों पर पलायन का प्रभाव– ग्रामीण क्षेत्रों से होने वाला पलायन केवल गाँवों को ही प्रभावित नहीं करता, बल्कि नगरीय समाज पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ता है।

नगरों में बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिकों के आगमन से सस्ते श्रम की उपलब्धता बढ़ती है, जिससे निर्माण उद्योग, परिवहन, होटल व्यवसाय, घरेलू कार्य तथा अन्य सेवा क्षेत्रों को लाभ मिलता है।[25]

किन्तु अनियंत्रित पलायन के कारण महानगरों में आवास संकट, झुग्गी–झोपड़ियों का विस्तार, यातायात दबाव, पेयजल की कमी तथा पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं।

प्रवासी श्रमिकों को प्राय: असंगठित क्षेत्र में कार्य करना पड़ता है, जहाँ सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा तथा न्यूनतम मजदूरी जैसी सुविधाएँ पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं होती हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान प्रवासी श्रमिकों की कठिनाइयों ने इस समस्या को और अधिक स्पष्ट किया।[26]

सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिणाम– पलायन सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण समाज के पारंपरिक मूल्य, व्यवहार प्रतिमान तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ प्रभावित होती हैं।

नगरों में कार्यरत प्रवासी व्यक्ति जब अपने गाँव लौटते हैं, तो वे अपने साथ नए विचार, जीवन शैली, उपभोग संबंधी आदतें तथा सांस्कृतिक अनुभव भी लेकर आते हैं। इससे ग्रामीण समाज में आधुनिकता एवं नवीन सामाजिक चेतना का प्रसार होता है।[27]

जातिगत बंधनों तथा रूढ़िवादी मान्यताओं में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। नगरीय जीवन में विभिन्न सामाजिक समूहों के साथ संपर्क स्थापित होने के कारण सामाजिक सहिष्णुता एवं बहुलतावादी दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है।

इसके विपरीत कुछ विद्वानों का मत है कि अत्यधिक पलायन से ग्रामीण समुदायों की सामुदायिक एकता कमजोर होती है। पारंपरिक लोक कलाएँ, स्थानीय त्योहार तथा सांस्कृतिक गतिविधियाँ प्रभावित होने लगती हैं।

सामाजिक नियंत्रण की पारंपरिक संस्थाओं की भूमिका में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। पंचायत, जातीय संगठन तथा पारिवारिक बुजुर्गों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम हुआ है तथा व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिला है।[28]

पलायन से संबंधित चुनौतियाँ एवं सरकारी प्रयास– ग्रामीण पलायन को पूर्णत: रोकना संभव नहीं है, क्योंकि यह विकास की प्रक्रिया का एक स्वाभाविक अंग है। तथापि अनियंत्रित एवं विवशतापूर्ण पलायन को कम करने के लिए प्रभावी नीतियों की आवश्यकता है।

भारत सरकार द्वारा ग्रामीण रोजगार सृजन तथा आजीविका संवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।[29] इनमें प्रमुख हैं–

1. **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा)–** यह योजना ग्रामीण परिवारों को प्रतिवर्ष 100 दिनों के रोजगार की गारंटी प्रदान करती है।
2. **दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना–** इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रोजगार योग्य बनाना है।
3. **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन–** महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए यह योजना संचालित की जा रही है।
4. **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना–** कृषि उत्पादकता में वृद्धि तथा किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से इस योजना को लागू किया गया है।

इन योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं तथा विवशतापूर्ण पलायन को कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष – ग्रामीण भारत में पलायन एक बहुआयामी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के परिणाम सामने आते हैं। यह प्रक्रिया एक ओर रोजगार, शिक्षा, आय वृद्धि तथा सामाजिक गतिशीलता के अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर पारिवारिक विघटन, कृषि संकट, महिलाओं पर बढ़ते कार्यभार तथा बच्चों के समाजीकरण में परिवर्तन जैसी समस्याओं को जन्म देती है।

पलायन को केवल समस्या के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में समझना आवश्यक है। आवश्यकता इस बात की है कि ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, कृषि आधारित उद्योग तथा स्थानीय रोजगार के अवसर विकसित किए जाएँ, जिससे लोग विवश होकर पलायन करने के बजाय अपनी इच्छानुसार आजीविका के विकल्प चुन सकें।

संतुलित क्षेत्रीय विकास, समावेशी आर्थिक नीतियाँ तथा सामाजिक सुरक्षा उपाय ग्रामीण पलायन की चुनौतियों का प्रभावी समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. किंग्सलेडेविस, मानव समाज (Human Society), मैकमिलन कंपनी, न्यूयॉर्क, 1949।
2. एम. एन. श्रीनिवास, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन (Social Change in Modern India), ओरिएंटलॉन्गमैन, नई दिल्ली, 1995।
3. भारत की जनगणना, पलायन सारणियाँ (Migration Tables), भारत सरकार, 2011।
4. ए. आर. देसाई, भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र (Rural Sociology in India), पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई, 2012।
5. एवरट एस. ली, 'पलायन का सिद्धांत' (Theory of Migration), डेमोग्राफी, खंड–3, अंक–1, 1966।
6. एस. के. जैन, जनसंख्या अध्ययन (Population Studies), रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2005।
7. भारत की जनगणना, पलायन संबंधी आँकड़े (Migration Data), भारत सरकार, 2011।
8. जान ब्रेमन, अस्थायी श्रम (Footloose Labour), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, 1996।
9. बिपिन चंद्र, भारत का स्वतंत्रता संग्राम (India's Struggle for Independence), पेंगुइनबुक्स, नई दिल्ली, 1989।
10. राम आहूजा, भारतीय सामाजिक व्यवस्था (Indian Social System), रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2014।
11. भारत सरकार, आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24, वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली, 2024।
12. अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO), भारत में कोविड–19 एवं श्रम पलायन

(COVID-19 and Labour Migration in India), 2021।
13. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, वार्षिक प्रतिवेदन2024, भारत सरकार, नई दिल्ली।
14. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO), रोजगार एवं बेरोजगारी प्रतिवेदन, 2023।
15. शिक्षा मंत्रालय, अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE), भारत सरकार, 2024।
16. भारत सरकार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, वार्षिक प्रतिवेदन, 2024।
17. जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC), जलवायु परिवर्तन मूल्यांकन प्रतिवेदन, जिनेवा, 2023।
18. आई. पी. देसाई, महुवा में परिवार के कुछ पक्ष (Some Aspects of Family in Mahuva), एशिया पब्लिशिंग हाउस, बंबई, 1964।
19. संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन (UN Women), भारत में महिलाएँ और पलायन (Women and Migration in India), 2022।
20. नाबार्ड, भारत में स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups in India), मुंबई, 2023।
21. यूनिसेफ इंडिया, पलायन से प्रभावित बच्चे (Children Left Behind by Migration), नई दिल्ली, 2021।
22. यूनेस्को, वैश्विक शिक्षा निगरानी प्रतिवेदन (Global Education Monitoring Report), पेरिस, 2022।
23. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), वार्षिक प्रतिवेदन2024, मुंबई।
24. ए. कुंडू, भारत में पलायन और नगरीकरण (Migration and Urbanisation in India), सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2018।
25. आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, वार्षिक प्रतिवेदन2024, भारत सरकार, नई दिल्ली।
26. अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन (IOM), विश्व प्रवासन प्रतिवेदन2024 (World Migration Report), 2024।
27. एंथनीगिडेन्स, समाजशास्त्र (Sociology), पॉलिटी प्रेस, लंदन, 2013।
28. योगेन्द्र सिंह, भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण (Modernization of Indian Tradition), रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010।
29. ग्रामीण विकास मंत्रालय, वार्षिक प्रतिवेदन2024, भारत सरकार, नई दिल्ली।

****